ISSN: 2347-2723 IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 2 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF LITERATURE

जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)

सार –

प्रस्तुत सर्वेक्षण अध्ययन को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जनसंख्या के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु किया गया है जिससे परिणाम प्राप्त होता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र–छात्राओं तथा दोनों समूहों के कुल विद्यार्थियों के मध्य जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

प्रस्तावना :

विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या आज सभी के लिए चिंता का विषय बन चुकी है। भारत ही नही अपितु पूरा विश्व इस समस्या का सामना कर रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भोजन–पानी ही नही अपितु रहन–सहन की सुविधा, चिकित्सा, शिक्षा, यातायात आदि अनेकानेक आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति सभी के लिए सुलभ नही है। मई 2016 तक भारत की जनसंख्या 1.3 (Billion) से अधिक हो चुकी है, भारत की तेजी से बढ़ती जनसंख्या अत्यधिक चिंता का विषय बन चुकी है, इसी दर से बढ़ती जनसंख्या सन् 2028 तक भारत को सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में पहले पायदान पर लाकर खड़ा कर देगी।

यद्यपि भारत में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए अनेकानेक उपाय किये जा रहे हैं फिर भी बढ़ती हुयी जनसंख्या को देखते हुये वह सभी असफल सिद्ध हो रहे हैं। इसके लिये आवश्यक है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को जनसंख्या शिक्षा प्रदान कर उन्हे इसके प्रति जागरूक बना सकें।

क्योंकि हमारे भावी नागरिकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ही जनसंख्या विस्फोट की समस्या को हल करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. जनसंख्या शिक्षा के प्रति विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग की छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग के छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. जनसंख्या शिक्षा के प्रति विज्ञान वर्ग की छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. जनसंख्या शिक्षा के प्रति विज्ञान वर्ग के छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

1. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. जनसंख्या शिक्षा के प्रति कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के छात्रों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन –

प्रस्तुत अध्ययन को उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है। इसके अन्तर्गत केवल विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है।

अनुसंधान विधि –

अध्ययन हेतु प्रदत्त संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

उद्देश्य पूर्ण प्रति चयन विधि द्वारा संयोगिक रूप से 80 विद्यार्थियों का चयन दो उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से किया गया है इसके

अन्तर्गत छात्र–छात्रायें दोनों निहित हैं।

प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सोढ़ी एवं शर्मा द्वारा निर्मित जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति परिसूची का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्कीय –

मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मूल्य ।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

तालिका संख्या – 1

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
विज्ञान	40	20.4	60.98	0.67	सार्थक नहीं
कला	40	18.6	10.49		

दोनों समूहों के मध्य परिगणित 'टी' मूल्य 0.67 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर तथा 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है जो यह प्रदर्शित करता है कि कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 01 स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या –2

वर्ग	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
विज्ञान (छात्रायें)	20	20.01	6.47	1.62	सार्थक नहीं
कला (छात्रायें)	20	16.8	6.45		

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 20.01 तथा 16.8 है दोनों समूहों के मध्य प्राप्त 'टी' मूल्य 1.62 है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर तथा 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है जो यह प्रदर्शित करता है कि कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 02 स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या –3

वर्ग	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
विज्ञान (छात्र)	20	20.4	4.84	0.069	सार्थक नहीं
कला (छात्र)	20	20.5	4.05		

उपरोंक्त तालिका 03 को देखने पर ज्ञात होता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों का मध्यमान क्रमशः 20.4 तथा 20.5 है, तथा दोनों समूहों के मध्य प्राप्त 'टी' मूल्य 0.069 है जिससे यह प्रदशित होता है कि दोनों समूहों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

उपसंहार –

उपर्युक्त परिणाम प्रदर्शित करते है कि कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के कुल विद्यार्थियों, विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं व दोनों वर्गों के छात्रों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.अग्रवाल, एस.एन. (1973), इंडियाज पॉपूलेशन प्रॉबल्मस बॉम्बे : टाटा मैक्ग्रो : हिल कॉ ।
2.अग्रवाल, एस. (1990) 'एन इन्वेस्टीगेशन इं टू द अवेयरनेस अमंग प्राइमरी एंड सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स टूवार्ड्स पॉपूलेशन प्रॉब्लम एंड एटीट्यूड टूवार्डस पॉपूलेशन एजूकेशन,' पी–एच.डी.,(एजू.) कानपुर यूनि.।
3.अहलूवालिया एस.पी. (1984), पॉपूलेशन एजूकेशन : ए स्टडी ऑफ अवेयरनेश, बिलीफ एंड एटीट्यूडस ऑव स्टूडेन्ट्स एंड टीचर्स : ट्रेन्ड्स इन

एजूकेशन, 11 (2), पृ. 1–8।
4.बेस्ट, जॉन डब्लू. (1978), रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली, प्रिंटिस हॉल ऑव इण्डिया प्रा.लि.।
5.क्रूज, एल. (1980), नेचर, कन्सेप्ट एंड इश्यूज इन पॉपूलेशन एजूकेशन, बैंकॉक : यूनेस्को।
6.जेकबसन, डब्ल्यू. जे. (1979), पॉपूलेशन एजूकेशन : ए नॉलेज बेस, न्यूयॉर्क : टीचर्स कॉलेज, कोलम्बिया यूनि.।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)